(माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल जी के अंग्रेजी अभिभाषण का हिन्दी भावानुवाद)

आदरणीय डॉ0 कर्ण सिंह जी, प्रो0 डी.पी. सिंह, प्रो0 बी.डी. सिंह, डॉ0 के.पी. उपाध्याय, संकाय सदस्य, छात्रगण तथा सम्मानित अतिथिगण ।

1. इस पवित्र और सुखद अवसर पर खुद को आपके बीच पाकर मैं वास्तव में गौरवान्वित महशूस कर रहा हूँ । यह वास्तव में उन लोगों के लिये यादगार दिन है, जो अपनी उपाधियाँ प्राप्त करने आये हैं । यह आप सबके जीवन में एक मील के पत्थर के समान है तथा मैं आपको इस विशिष्ट उपलब्धि के लिये तहेदिल से बधाई देता हूँ । मैं जानता हूँ कि भारत के इस अग्रणी और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से ऐसी उपलब्धि प्राप्त करने के लिये अत्यधिक परिश्रम, समर्पण एवं समय की आवश्यक्ता होती है। यहाँ आकर मुझे अपने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के दिन याद आ रहे हैं । विख्यात शिक्षाविद डॉ0 चार्ल्स इलियट से प्रायः पूछा जाता था कि ''हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने कैसे सबसे बड़े ज्ञान के भंडार के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की ?'' तब उनका कुशल जवाब होता था कि ''ऐसा इसलिये संभव हुआ क्योंकि नवागन्तुक यहाँ बहुत कुछ लेकर आते हैं तथा वरिष्ठ अपना सबकुछ छोड़कर जाते हैं'' । मजाक नहीं, आप सभी ने इस उपाधि प्राप्ति के लिये बहुत मेहनत की है ।
2. निःसंदेह आप भी मेरी बात से सहमत होंगे कि श्रोताओं में भी एक ऐसा समूह है जो आज बधाई के पात्र है । ये आपके परिवार के वे सभी सदस्य हैं जिन्होंने आपके शैक्षिक महत्वाकांक्षा के लिये त्याग किया । आज आपकी यह उपलब्धि आपके माता–पिता तथा परिवार के सदस्यों के धैर्य, सहयोग, परिश्रम तथा प्रेम के साथ शिक्षकों के समर्पण तथा प्रतिबद्धता का परिणाम है । आपकी उपलब्धि और ख्याति में उनका भी हिस्सा है । आपको उन्हे अवश्य धन्यवाद देना चाहिए । लेकिन इन सबके अतिरिक्त एक ऐसे भी व्यक्ति हैं जिनका आपको विशेष आभारी होना चाहिए वह हैं आपके विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय जी । ऐसे समय में जब भारत औपनिवेशिकता का शिकार था उनके पास इस महान विश्वविद्यालय को स्थापित करने का दूरदर्शी विचार और साहस आया । अत्यधिक कठिन समय होने के बावजूद उन्होंने खुद की शक्ति पर विश्वास किया । उनका विश्वास था कि एक व्यक्ति के पास असीम कल्पना, विचार एवं अनगिनत निर्माण की संभावनायें होती है, जिनका उपयोग वह अपने जीवन तथा परिवार के विकास के लिये कर सकता है । अपितु इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण तरीके से समाज निर्माण एवं अपने आस–पास के संसार को सुखकारी एवं समृद्ध बनाने के लिये कर सकता है । उन्होंने (महामना ने) अपने इस विचार को मूर्तरूप प्रदान किया । कहना न होगा कि उनके दृढ़ विश्वास और विचार का लाभ आज हमसब ले रहे हैं ।
3. निःसंदेह आप भी मेरी इस बात से सहमत होंगे कि हम एक अनोखे परिवर्तनकारी समय में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जो कि खतरों से भरा हुआ है । फिर भी यह समय अपार संभावनाओं से परिपूर्ण है । हम ऐसे संसार में जी रहे हैं, जिसे आर्गेनाइजेशन फार इकोनामिक कार्पोरेशन एण्ड डेवलपमेंट ने इमर्जिंग सिस्टमेटिक रिस्क'' का नाम दिया है । जिसकी उत्पत्ति जटिल सामाजिक, तकनीकी

पर्यावरण और आर्थिक पद्धति के परस्पर कार्यों के बीच से होती है । जैसा कि आप में से अधिकांश लोग जानते हैं कि यह विश्व अर्थव्यवस्था के वर्तमान समय में गंभीर पुर्नसंरचना की प्रक्रिया का परिणाम है ।

4. मेरे विचार से चार मौलिक विकास इस प्रक्रिया के लिए जिम्मेदार है । पहला आईटी पर केन्द्रित तकनीकी क्रान्ति, दूरसंचार तथा नये उद्योगों और नौकरियों के परिणामस्वरूप तेजी से फैलता कम्प्यूटर कई स्थापित व्यापार यहाँ तक कि उत्पादन और बटवारे के लिए कर्मचारियों के नियुक्ति और ग्राहक तक पहुँचाने के महत्व के तरीकों को बदल रहे हैं । दूसरा प्रबन्धकीय क्रांति है । प्रारम्भ में गुणवत्ता नियंत्रण और सामूहिक उत्पादन के लिए जापानी तकनीक के विस्तार के साथ जुड़ा हुआ था । बाद में यह वितरक और ग्राहक के सम्बन्ध तक फैल गया, लेकिन अब ये कई नये उत्पादन के रूप में वितरण संसार में चारो ओर फैले हुए नौकरी पेशा लोग बढ़ते हुए रीति–रिवाजों और कार्य सम्बन्धों विविधताओं तक फैल गया है । तीसरा विकास महत्वपूर्ण तरीके से बिना किसी रूकावट के राष्ट्र के सीमा के बहार श्रम के प्रभाव के क्षय के साथ तेजी से बढ़ता हुआ पूँजीवादी आन्दोलन है । चौथा विश्व व्यापार संघ और दूसरे अर्न्तराष्ट्रीय अग्रणी सभी प्रकार के राष्ट्र के बाहर व्यापारिक सम्मेलनों और नीतियों का निर्माण है ।

5. विकास के इन नीतियों द्वारा उत्पन्न की गयी परिस्थितियों ने देश और राज्यों को प्रतिस्पर्धा को जीवित रखने और इस प्रकार अपनी जनता की आर्थिक कल्याण को उपर उठाने को तेजी से दवाब में ला दिया है । भारत जैसे विशाल धार्मिक और जातिगत विविधता वाले देश के लिए उत्पादन और विकास को विकसित ज्ञान आधारित आर्थिक प्रक्रिया के द्वारा बढ़ाना कूटनीति के लिए प्रमुख चुनौती रहा है क्योंकि यहां सामाजिक बनावट और सम्बन्धों को संतुलित रखना होता है । इस प्रकार यह खुला परिदृश्य एक ऐसे निमित्त और नीति को आमन्त्रित करता है जो न ही भूमण्डलीय पर्यावरण के लिए जिम्मेदार हो अपितु इसकी जड़े हमारे सम्पन्न स्थानीय प्रकृति में भी मौजूद हों ।

6. जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हम कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था से सेवा प्रधान अर्थव्यवस्था की ओर तीव्र गति से पहुँच आये हैं । उत्पन्न होते हुए ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में शिक्षा व्यक्ति विशेष तथा राष्ट्र के बीच में सामाजिक अन्तरों को हटाने वाला महान साधन हो गया है । तदनुसार हम लोगों के पास प्रारम्भिक शिक्षा से जो कि क्रमिक निष्क्रियता, पुरोहित सम्बन्ध पर आधारित एवं असंगठित भाव से युक्त था, के उदाहरण नई पद्धति में बदलने के अलावा विकल्प नहीं है । नई पद्धति जैसे –

a. शक्तियुक्त, प्रबल और साहसी
b. सम्मिलित और पूर्ण
c. बैद्धिक कुशलता और रचनात्मकता उत्पन्न करने पर केन्द्रित हो
d. भारतीय समाज के उप–पद्धति के आवश्यकता के क्रम में हो
e. भूमण्डलीय कार्यक्षेत्र में व्यवसायिक तकनीकी, रोजगारपरक शिक्षा की आवश्यकता को पूरा करने योग्य हो ।

इस चुनौती को जानते हुए हम सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति में व्यवस्थित और क्रमिक आधार पर परिवर्तन कर रहे हैं । सरकार इस प्रयास के लिए प्रशंसनीय कदम उठा रही है और इसी अनुसार शिक्षा पर अधिक निवेश करने के लिये तत्पर है ।

ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना मुख्यतः राष्ट्रीय शैक्षणिक योजना है । 10वीं पंचवर्षीय योजना पर शिक्षा के लिए निर्धारित सरकारी बजट 7.7 प्रतिशत से बढ़कर 11वीं पंचवर्षीय योजना में 19 प्रतिशत से उपर हो गया है । सीधे शब्दों में शिक्षा के उपर पाँच गुना व्यय अधिक हो रहा है ।

7. शिक्षा के लिए यह अद्वितीय व्यय सुरक्षित करता है कि हम आवश्यक सुविधा प्राप्त करने के लिए अत्यधिक शिक्षित लोंगो का लाभ उठा सकते हैं । शिक्षा को आज राष्ट्रीय प्रधानता का विषय माना गया है । अभी तक ऐसे 100 बच्चे जो हाईस्कूल पास करते हैं उनमें से केवल 12 स्नातक हो पाते हैं । इस प्रकार के उच्च दर से राष्ट्र की खुशहाली के लिए अत्यधिक मात्रा में योग्य आवश्यक लोगों को उत्पन्न करने के कतई उचित नहीं है । हमारी संख्या 100 हाईस्कूल पास करने वाले में कम–से–कम 30 होनी चाहिए । हमारी गुणवत्ता भी अवश्य सुधरनी चाहिए । उच्च क्वालिटी की शिक्षा दो प्रमुख तथ्यों से उत्पन्न होती है । पहला मूलभूत सुविधाओं की गुणवत्ता जो कि बहुत अधिक निवेश के उपर निर्भर करता है और जिसके लिए सरकार समर्पित है और दूसरा अति महत्वपूर्ण छात्र तथा अध्यापक की गुणवत्ता । हम लोग इन सभी पहलूओं की ओर कदम बढ़ा रहे हैं ।

8. केन्द्रीय विश्वविद्यालय में होकर के आप भाग्यशाली हैं क्योंकि कई निजी संस्थानों मे छात्र, संस्थान के प्रबन्धन और कुछ मामलों में यहां तक कि अध्यापक विवादों से घिरे होते हैं । इस तरह के मामलों को निपटाने के लिए हम शैक्षणिक न्यायलयों को स्थापित करने का प्रस्ताव ला रहे हैं और कई व्यावसायिक संस्थान अत्यधिक शुल्क और चंदे लेकर अनुचित क्रिया–कलापों में लिप्त है । एक उचित संविधान बनाकर हम इस प्रकार के क्रिया–कलाप को रोकना चाहते हैं । उच्च शिक्षा को नियंत्रित करने के लिए हमारा लक्ष्य एक नियोजक प्राधिकरण स्थापित करने का भी है जो कि इस क्षेत्र में संस्थानों को स्थापित करते समय नियमों को बनायेगी और लागू करेगी एवं गुणवत्ता की भी जांच करेगी । हम लोग इस देश में शिक्षा प्रदान करने वाले विदेशी संस्थानों के लिए कानून लाने पर विचार कर रहे हैं, जिससे कि छात्र इस प्रकार के 'आये राम और गये राम' वाले संस्थानों से बच सके । इससे वे विश्वविद्यालय जो भारत में शिक्षा देने हेतु अपनी इकाईयाँ स्थापित करना चाहते हैं उन्हें एक उचित प्लेटफार्म मिल सके ।

9. उच्च शिक्षा में शैक्षणिक सुधारों की प्रक्रिया शुरू की गयी है, जिसमें सेमेस्टर सिस्टम लागू करना पाठ्यक्रम में नियमित उच्चकरण एवं नवीनीकरण विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली जो छात्रों को उनकी इच्छा अनुसार पाठ्यक्रम चुनने और क्रेडिट हासिल करने में सहायक हो । अनिवार्य मूल्यांकन एवं प्रभावीकरण प्रक्रिया शामिल है । मेरी सोच है कि आने वाले दशक में भारत ज्ञान की शक्ति बने ।

10. मुझे बताया गया है कि दीक्षान्त समारोह में मुझसे आशा की जाती है कि मैं कुछ सलाह दूं लेकिन मैं स्पष्टवादी व्यक्ति हूँ और मुझे उपदेश देने की आदत नहीं है । एक मात्र चीज जो मैं आप से कह सकता हूँ कि वह यह है कि भविष्य स्थायी नहीं बल्कि गतिशील है । आप अपनी इमारत अथवा झोपड़ी स्वयं बना सकते हैं । लेनिक मेरे कहने का सामान्य सा आशय है कि यह संसार आपी सोच से भी ज्यादा लचीला है और यह (संसार) आपका इंतजार कर रहा है कि आप आये और इसे अपनी शक्ति प्रदान करे। आपकी यह उपाधि आपके हाथों में इस कार्य हेतु एक प्रभावशाली औजार है। इसलिए आगे बढ़िए और इसे बनाइए, नये भारत में यह आपकी पीढ़ी का एक महान समय है ।

11. आज देश को आप जैसे नौ जवानों की जरूरत है जो आगे बढ़कर जिम्मेदारी उठा सके और अपने कठोर परिश्रम से भारत को हम सभी के लिए एक बेहतर भारत का निर्माण कर सकें । क्योंकि यही वह समय है जब भारत के कई भागों में अशांति है जब हमारे लागों में जबर्दस्त असमानता है जब चुनौतियां अजेय लग रही है । यह आसान है कि हम अपनी असहाय अवस्था को व्यक्त करें और पूछे ि इन कठिन परिस्थितियों में कोई क्या कर सकता है ? मेरा विश्वास जो कि मेरे निजी अनुभव से आता है । यह है कि आप बहुत कुछ कर सकते हैं । आज मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप मेरी तरफ स्वयं की शक्ति में विश्वास करें । आप एक व्यक्ति है पर आप में प्रतिभाएं अनेक हैं आपके पास बहुत सी प्रतिभांए हैं, जिसका उपयोग आप अपने कैरियर, परिवार अपनी जिन्दगी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक समाज और विश्व के निर्माण में कर सकते हैं ।

12. मैं मानता हूँ कि हम सभी को हमारे समाज के प्रबंधन नियंत्रण और सुधार की जिम्मेदारी लेनी चाहिए अगर आप सभी इस मिशन को चुने हुए राजनितिज्ञों के उपर छोड़ देंगे तो आप को ऐसी दिशाओं में ले जा सकते हैं, जिधर आप अपने प्रिय सिद्धान्तों से समझौता कर लेंगे । दूसरे शब्दों में उस स्वप्न का क्या फायदा जो अपने पूर्ति के लिए चुने हुए प्रतिनिधियों पर ही निर्भर रहे । एक स्वप्न हो और उसे अपने कर्मो से हकीकत में बदल डालिए ।

13. मैं विश्वास करता हूँ कि एक बुद्धिमान व्यक्ति कुछ भी कर सकता है । हाँ कुछ ही क्रिया-कलाप ऐसे हैं जिनमें हम सभी में से कोई भी आगे जा सकता है । लेकिन मैं आपको आवश्वसन देता हूँ कि सैकड़ों अन्य क्रिया-कलाप ऐसे हैं, जिनमें हममें से भी बहुत अच्छे हो सकते हैं और बहुत कम ऐसे काम हैं, जिनमें हमारे परिणाम वास्तविक प्रयास करने के बाद भी खराब होंगे । इसलिए कोइ पूर्ण कार्य आप के पास आयेगा ऐसा इन्तजार मत करिए ।

14. युवा मस्तिष्क जो कि आज स्नातक हो रहे हैं, के कंघों पर भारी जिम्मेदारी है मैं आप सभी को एक नये भारत के लिए परिवर्तन के वाहक के रूप में देखना चाहता हूँ । भारत के लिए, क्रियात्मकता के इस युग में ज्ञान गुरू बनने का लक्ष्य आपके जीवन काल में ही सम्भव है । इस स्वप्न को आप हकीकत में बदल सकते हैं । आप ज्ञान आधारित नये भारत में नेता बन सकते हैं, जो कि है - सर्वोत्तम से कभी समझौता नहीं, कमी छोड़िए नहीं और हर मुश्किल को अवसर में बदल डालिए ।

15. मित्रों, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भारतीय होने का यह एक महान समय है इससे भी ज्यादा भारत में होना एक महान समय है । इस महान इतिहास वाले देश में क्रिया-कलापों का हिस्सा होना गर्व की बात है, जो कि एक महान भविष्य की ओर आगे बढ़ रहा है । विश्व को और अपने जीवन को आकार देने में हमारी शुभकामनायें लें यह आपके लिए महान दिन है और एक नया जीवन इस महान संस्थान की कक्षाओं से बाहर आपका इंतजार कर रहा है ।